

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमन्निगमान्तमहादेशिकैरनुगृहीतं  
॥ शतदूषणीसु श्रीहयग्रीरस्तोत्रम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শতদূষণীস্থ শ্রীহযগ্রীরস্তোত্রম্ ॥

শ্রীমান্ রেঙ্কটনাথার্যঃ করিতার্কিককেসরী।

বেদান্তাচার্যরর্থো মে সন্নিধত্তাং সদা হৃদি ॥

সমাহারঃ সাম্নাং প্রতিপদমূচাং ধাম যজুষাং  
লযঃ প্রতুহানাং লহরি রিততিবোধজলধেঃ।  
কথাদর্পক্ষুভ্যৎকলিকথক কোলাহলভরং  
হরৎরন্তর্ধ্রান্তং হযরদন হেষা হলহলঃ ॥ 1 ॥

হযগ্রীরসুধাসিন্ধুহর্ষহেষাররোর্মযঃ।  
জযন্তি রাদবেলান্তক্ষিপ্তবাহ্যকুদৃষ্টযঃ ॥ 2 ॥

সংপ্রজ্ঞাতস্থিতিমধিগতে নিরিকল্পে সমাধৌ  
শান্তারদ্যং স্তিমিতবহুলানন্দসন্দোহমন্তঃ।  
যত্তদ্রক্ষ্ম স্ফুরতি যমিনাং পূর্ণষাডগুণ্যরুপং  
সা মে নিত্যং হৃদি হযমুখী দেৱতা সন্নিধত্তাম্ ॥ 3 ॥

যদাআনো বেদা যদনুগুণরণাকৃতিজুষঃ  
প্রমাণং যত্রৈতে নিযতমপরিচ্ছেদ্যরিভরে।  
য এষামাহর্তা দনুজমথনো রাজিরদনঃ  
স মে দেৱঃ শ্রীমান্ রিদলযতু সম্মোহমখিলম্ ॥ 4 ॥

অবাধাদধ্যক্ষপ্রভৃতি মিতিরর্গেশ্বরধৃতং  
শরীরং যস্যেদং জগদখিলমন্তর্যমযিতুঃ।  
স মে তর্কৈরেতৈর্নিজরিভরলুঠাকমথনৈঃ  
প্রসীদৎরাসীদন্নিগমশতসীমা হযমুখঃ ॥ 5 ॥

अञ्जानसन्तमसमाश्रयणोन्मुखानां  
संरिंप्रदीपमहसा सहसा निरुक्कन्।  
रिद्यास्त्रयंररपतिर्यपहल्त्ररिद्यां  
सरानुडूः स भगरान् पुरुषोत्तमो नः ॥ 6 ॥

रिदितमनुरदन्तो रिश्रमेतद्यथारं  
रिदधति निगमास्ताः केरलं यन्मयंरम्।  
अरिदितवल्डूमा नित्यमन्तरिधत्तां  
हयररदनोहसौ सन्निधिः सन्निधिं नः ॥ 7 ॥

हयमुखमुथैस्तुद्रैरकर्मरिनिर्मितैः  
उपदिशति यस्तथ्यं पथ्यं सतामरसीदताम्।  
जननपदरीयातायातश्रमापहरां धियं  
जनयतु स मे देरः श्रीमान् धनञ्जयसारथिः ॥ 8 ॥

नमस्त्रेधा रिभक्तानामात्मानामन्तरात्ने।  
ब्रह्मणे हयरत्राय वक्त्रमोक्त्रैकहेतरे ॥ 9 ॥

य एको दुर्लङ्घ्यत्रिगुणनिजमायानिगलितैः  
रिचितैः क्त्रैरिहरति सरोजासहचरः।  
जगत्सर्गक्त्रैमक्त्रपणपरिकर्मीणमहिमा  
दयालुर्देरोहसौ तुरगरदनस्तारयतु नः ॥ 10 ॥

अनन्यानां पुंसामनरधिकभक्तिस्थितिजुषाम्  
अरिद्याध्रंसो यच्छरणररिस्यापरिणतेः।  
तदेकं सत्संरिंसुखमरधिदूरीकृतगुणं  
हताशेषारद्यं हयरदनमीडीमहि महः ॥ 11 ॥

हताशेषक्लेशा निररधि महानन्दधनिनो  
रयं डूयास्मेति स्थिरमनघरर्न्याधिकृताः।

অনাম্নাতদ্বন্দ্বা হযমুখপদদ্বন্দ্বরুচযঃ

স্বদস্তাং মে সন্তঃ শ্রুতিজলধিমুষ্টিস্বধিযঃ ॥ 12 ॥

॥ শ্রীহযগ্রীরস্তোত্রং সমাপ্তম্ ॥

করিতার্কিকসিংহায় কল্যাণগুণশালিনে ।

শ্রীমতে রেক্ষটেশায বেদান্তগুরবে নমঃ ॥